आपने लिखा

मैं विज्ञान शिक्षिका हूं। विज्ञान पढ़ाते समय संदर्भ काफी उपयोगी होती है। कई मुद्दे, संदर्भ में छपे लेखों और चित्रों से काफी स्पष्ट हो जाते हैं। खासकर पिछले कुछ अंकों की बात करूं तो परागण क्रिया से संबंधित लेख, परजीवी पौधे आदि।

हमारी स्कूल के कई छात्र संदर्भ से परिचित हैं। कक्षा दसवीं में 'धातुएं और अधातुएं' अध्याय पढ़ते हुए जब छात्रों को पता चला कि ग्रेफाइट की क्रुसिबल बनाकर उसका उपयोग धातुओं को पिघलाने के लिए किया जाता है तो उनका प्रश्न था कि तो फिर ग्रेफाइट को किसमें पिघलाया जाता है?

चूंकि इसका उत्तर मुझे नहीं पता था तो मैंने कहा कि आप प्रश्न लिखकर दो, हम संदर्भ में 'सवालीराम' के पास इसे भेजेंगे... तो उन्हीं के द्वारा लिखा हुआ प्रश्न भेज रही हूं। यदि उत्तर दे सकें तो बेहतर होगा।

प्रतीक्षा पण्डया
शा. उ. मा. वि. टोंककला, देवास, म. प्र.

अगले अंक में सवालीराम स्तंभ के तहत इस सवाल का जवाब दिया जा रहा है।

- संपादक मंडल

संदर्भ का अंक 50 वाणी प्रकाशन, दिल्ली के माध्यम से पढ़ने को मिला। तकनीकी और वैज्ञानिक विचारों की पत्रिका में बहुत कुछ समेटा हुआ है। पाठकों के लिए विज्ञान की विविध शाखाओं, गणित तथा टेक्नॉलाजी की विषय वस्तुओं पर पठनीय व शोधपरक आलेखों में जो महत्वपूर्ण जानकारी आपने परोसी हुई है, वह काबिले तारीफ है।

'छुईमुई का शर्माना' व 'वायु मंडल का दबाव' दो मुख्य आलेखों में शोध-परक तथ्यों समेत भरपूर जानकारी हासिल हुई। जीव विज्ञान में जिज्ञासा रखने वाले पाठकों को छुईमुई के स्पर्श में छिपे रहस्यों की वास्तविकता का पता चला।

समाजशास्त्र और नागरिक शास्त्र का आपसी संबंध क्या है और बच्चों को इस विषय में कितनी रुचि है, उसका विस्तृत रूप से उल्लेख नागरिक शास्त्र संबंधी लेख में किया है।

छोटी पुस्तिका शैक्षणिक संदर्भ आज के समय में आविष्कारिक पत्रिका साबित हुई है।

जसवंत सिंह जनमेजय
आर.के. पुरम, दिल्ली

अंक 52 में 'बी शूमिन' की कहानी 'टूटे खिलौने' पढ़ी। बालक की सोच सकारात्मक बने, वह दूसरों की खुशी के लिए स्वयं कष्ट सहन करना सीखे तथा उदारता की भावना रखे, इसे ही संस्कार-युक्त विकास कहते हैं। बालक की प्रथम शिक्षक मां ही होती है और वह शायद तब तक निश्चिंत रहती है जब तक उक्त गुण बालक में उभरते हैं।

इस कहानी में भी जब तक बालक ने ये गुण दर्शाए उसकी मां उसे हर डांट से बचाने में सहयोग करती रही क्योंकि ये डांट अनुचित थी। परन्तु जब बालक की सोच नकारात्मक बनी, उसने भी मोटू से अपने खिलौने का मुआवज़ा मांग लिया तब मां का धैर्य टूट गया, उसके सपनों का संस्कारित बालक, पूंजीवादी युग का साधारण लोभी बालक बन गया, और

इसी दर्द को उसने बालक को चांटा लगाकर व्यक्त किया।

प्रश्न उठता है कि बालक को कब-कब डांटना चाहिए या कब उसकी स्वतंत्रता पर अंकुश लगाना चाहिए। आदर्श शिक्षाविद् डांट एवं अंकुश को सर्वथा अनुचित मानते हैं परन्तु फिर भी कोई सीमा तो होनी चाहिए। कहानी में यही दर्शाया गया है कि बालक का मन न टूटे इस हेतु आर्थिक भार भी सहन किया जा सकता है, लेकिन इतना कुछ करने के बावजूद अगर बालक का मन समाज से बुराइयां ग्रहण कर लेता है तो उसे सबक सिखाना ही होता है, शायद दंड भी देना पड़ता है। बालकों का समुचित विकास तभी संभव है जब सामाजिक समरसता का उचित वातावरण बने।

संदर्भ का काफी पहले से पाठक हूं और एक बात विशेष तौर पर कहना चाहता हूं - संदर्भ की लेखन शैली बहुत ही प्रभावी है। इसमें संपादक मंडल का ही विशेष योगदान दृष्टिगोचर होता है तभी तो अलग-अलग लेखकों के होते हुए भी सब लेख एक जैसे सरल, सुबोध एवं गतिमान लगते हैं।

हनुमान सहाय शर्मा
राज उच्च माध्य विद्यालय, भीलवाड़ा
राजस्थान

अंक 50 में प्रकाशित किस्सा बैरोमीटर का अत्यंत रोचक तो है ही, साथ ही विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में सम्मिलित करने हेतु भी आदर्श है। वास्तव में सच्ची शिक्षा वह है जो हमें तयशुदा, पूर्व निर्धारित रास्तों और विकल्पों के अतिरिक्त विभिन्न तरीकों से समस्या से जूझने का माद्दा प्रदान करे।

दयाकृष्ण पाण्डे
जाखनदेवी, अल्मोड़ा, उत्तरांचल

विगत तीन अंकों से सन्दर्भ नियमित समय पर मिल रही है।

सन्दर्भ के अंक-4(52) के लेख 'नाइट्रोजन' की भाषा मुझे अत्यन्त पेचीदा एवं तकनीकी शब्दावली से भरपूर होने के कारण कठिन लगी, क्योंकि मेरी शिक्षा कला विषयों से हुई है। 'यूरेका-यूरेका' में चमत्कार की बात करें तो ऐसा लगता है कि यह यूरेका हर किसी के जीवन में किसी-न-किसी रूप में होता ही रहता है। जहां समस्याएं होती हैं वहां समाधान भी होते हैं।

गणित शिक्षण से सम्बन्धित ऋणात्मक संख्या संबंधी लेख बहुत ज्ञानवर्द्धक लगा। खेलों द्वारा ऋणात्मक संख्याएं सिखाने का तरीका मुझे काफी नया और सरल लगा। कृपया आप साल में एक बार गणित, विज्ञान एवं भाषा शिक्षण से संबंधित कोई विशेषांक ज़रूर प्रकाशित कीजिए।

एनसीईआरटी की पुस्तकों की समीक्षा से इस संस्था के स्तर पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। उन्हें सोचना चाहिए।

बी शूमिन की कहानी 'टूटे खिलौने' पढ़कर बाल मनोविज्ञान की एक सच्ची झलक मिली तथा इससे पिता होने के नाते सीख भी मिली। अनुवादक एवं चित्रकार को भी धन्यवाद।

रमेश जांगिड़
भादरा, हनुमानगढ़,
राजस्थान

फॉर्म 4 (नियम - 8 देखिए)

द्वैमासिक शैक्षणिक संदर्भ के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के संबंध में जानकारी

प्रकाशन स्थल :	भोपाल	संपादक का नाम :	राजेश खिंदरी
प्रकाशन की अवधि :	द्वैमासिक	राष्ट्रीयता :	भारतीय
प्रकाशक का नाम :	(कमल महेंद्रू) निदेशक, एकलव्य	पता :	एकलव्य, ई-7/एच. आई. जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल, म. प्र. 462016
राष्ट्रीयता :	भारतीय		
पता :	एकलव्य, ई-7/एच. आई. जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल, म. प्र. 462016	उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है :	(कमल महेंद्रू) निदेशक, एकलव्य
मुद्रक का नाम :	(कमल महेन्द्रू) निदेशक, एकलव्य	राष्ट्रीयता :	भारतीय
राष्ट्रीयता :	भारतीय	पता :	एकलव्य, ई-7/एच. आई. जी. 453 अरेरा कॉलोनी, भोपाल, म. प्र. 462016
पता :	एकलव्य, ई-7/एच. आई. जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल, म. प्र. 462016		

मैं कमल महेंद्रू, निदेशक, एकलव्य यह घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

कमल महेंद्रू
निदेशक, एकलव्य
मार्च 2006

अंक 52 बहुत अच्छा लगा। 'आपने लिखा' के सभी पत्र अच्छे लगे। उन्हीं खतों में से एक में कमलेश उप्रेती का यह कथन सभी शिक्षकों-अभिभावकों को ध्यान में रखना चाहिए - बच्चों के मन में किसी चीज़ के बारे में जो छवि बचपन में निर्मित करवा दी जाती है उसको बदल पाना बहुत कठिन होता है, चाहे वह छवि गलत ही क्यों न हो।

कहानी टूटे खिलौने दिल को छू गई। यह कहानी वर्तमान भारतीय समाज को प्रदर्शित कर रही हो ऐसा लगता है।

सुभाष
सादतपुर, दिल्ली

पिछले अंक में एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्य पुस्तकों की समीक्षा वाला लेख पढ़ा। लेख बढ़िया लगा। सुशील जी काफी अच्छा लिख रहे हैं।

प्रेमपाल शर्मा
मयूर विहार, दिल्ली